



# तीन राज्यों में युवाओं पर कोविड-19 के प्रभाव का त्वरित मूल्यांकन, मई 2020

बिहार, राजस्थान और उत्तर प्रदेश

कार्यकारी सारांश



## लघुरूप

कोविड	कोरोनवायरस रोग (कोरोनवायरस डिज़ीज)
ईई	मनोरंजक शिक्षा (एंटरटेनमेंट एजुकेशन)
एफपी	परिवार नियोजन (फैमिली प्लैनिंग)
एफएलडब्ल्यू	प्रथम पंक्ति के कार्यकर्ता (फ्रंट लाइन वर्कर्स)
जीओआई	भारत सरकार (गवर्नमेंट ऑफ इंडिया)
आईएफए	आयरन और फोलिक एसिड
एमओएचएफडब्ल्यू	स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (मिनिस्ट्री ऑफ फैमिली एंड वेलफेअर)
एनजीओ	गैर सरकारी संगठन (नॉन गवर्नमेंट ऑर्गेनाइज़ेशन)
पीएफआई	पॉपुलेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया
पीएसए	लोक सेवा घोषणा (पब्लिक सर्विस अनाउंसमेंट)
आरएच	प्रजनन स्वास्थ्य (रिप्रोडक्टिव हेल्थ)
एसबीसीसी	सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन संचार (सोशल एंड बिहेवियरल चेंज कम्यूनिकेशंस)
एससी	अनुसूचित जाति (शेड्यूल कास्ट)
एसटी	अनुसूचित जनजाति (शेड्यूल ट्राइब)

# कार्यकारी सारांश

कोविड-19 महामारी ने बहुत कम समय में दुनिया भर के देशों को अपने घेरे में ले लिया है। भारत के लिए, यह आज़ादी के बाद सबसे बड़ा स्वास्थ्य और मानवीय संकट था और अभी भी बना हुआ है। भारत सरकार ने कोविड-19 को राष्ट्रीय आपदा घोषित किया और इसके प्रसार को रोकने के लिए 25 मार्च, 2020 को पूरे देश में पूर्ण तालाबंदी कर दी। यह तालाबंदी आज तक, राज्यों तथा क्षेत्रों में अनेक रूपों और विविधताओं के साथ जारी है।

महामारी और लंबी तालाबंदी ने स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था, आजीविका, सामाजिक और व्यवसायिक संबंधों की क्रिया सहित कई क्षेत्रों पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। इसके कारण लाखों लोगों की आजीविका को नुकसान पहुँचा और प्रवासियों का शहरों से अपने गांवों में पलायन होने के कारण मानव जीवन को भारी क्षति उठानी पड़ी।

यद्यपि स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने अपने दिशानिर्देशों में प्रजनन स्वास्थ्य और परिवार नियोजन को आवश्यक स्वास्थ्य सेवाओं के रूप में शामिल किया है, लेकिन तालाबंदी और सार्वजनिक स्वास्थ्य मशीनरी का ध्यान महामारी के प्रसार को रोकने पर केंद्रित होने के कारण, महिलाओं की आवाजाही और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच प्रतिबंधित हुई।

कोविड-19 का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव, विश्व स्तर पर धीरे-धीरे लेकिन अब लगातार उभरने लगा है। चीन, यूके, यूएसए और भारत जैसे देशों में जेंडर-आधारित और आत्मीय साथी द्वारा हिंसा बढ़ी है और मनोवैज्ञानिक संकट, क्रोध, अवसाद (डिप्रेशन) और अभिघातजन्य तनाव (पोस्ट ट्रौमेटिक स्ट्रेस) विकार का उच्च प्रसार हुआ है।

भारत में युवाओं में बाधित प्रजनन स्वास्थ्य सेवा और मानसिक स्वास्थ्य पर परिणामों की गंभीर रूप से खोजबीन करनी होगी। देश की आबादी का लगभग एक-पाँचवाँ हिस्सा बनाने वाले किशोर, शैक्षिक अनिश्चितताओं (स्कूलों और कॉलेजों के बंद होने, और डिजिटल शिक्षा के लिए अव्यवस्थित पहुँच के कारण), अपनी गतिशीलता, स्वतंत्रता और समाजीकरण पर प्रतिबंध, घरेलू कामों में बढ़ोतरी, घरेलू संघर्ष (जो अधिकतर महिलाओं को प्रभावित करता है), और अपने रोजगार की संभावनाओं के बारे में चिंताओं का सामना कर रहे हैं।

भारत के युवा इन चुनौतियों का सामना कैसे कर रहे हैं यह समझने के लिए, पॉपुलेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया (पीएफआई) ने कोविड-19 के प्रति युवा आबादी (15-24 वर्ष) के ज्ञान और दृष्टिकोण के स्तर और इसने उनके जीवन और मानसिक स्वास्थ्य, उनकी आवश्यकताओं और

प्राथमिकताओं को कैसे प्रभावित किया है, यह जानने के लिए एक त्वरित मूल्यांकन किया। इससे उत्पन्न प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण उन उपायों की पैरवी करने के लिए किया जाएगा, जो इन ज़रूरतों को कोविड-19 के प्रकोप के दौरान, और उसके बाद, दोनों स्थितियों में संबोधित करना जारी रखने में समर्थ हों।

तालाबंदी के दौरान, प्रत्यक्ष रूप से बातचीत करने की कठिनाई को ध्यान में रखते हुए, एक टेलीफोनिक सर्वेक्षण को डेटा संग्रह का सबसे उपयुक्त तरीका माना गया। सर्वेक्षण प्रश्नावली विकसित की गई और कलेक्ट (collect), एक मोबाइल डेटा कलेक्शन प्लेटफ़ॉर्म के लिए डिज़िटलाइज़ की गई। सर्वेक्षण तीन राज्यों - **उत्तर प्रदेश, राजस्थान और बिहार** - में आयोजित किया गया, जहाँ पीएफआई के राज्य कार्यालय हैं और युवाओं के साथ कार्यक्रम चल रहे हैं।

तीन राज्यों में जिलों, ब्लॉकों और उत्तरदाताओं का चयन सप्रयोजन और साथी संस्थाओं की उपस्थिति और युवाओं के संपर्क विवरण की उपलब्धता के आधार पर किया गया था। इसका उद्देश्य शोध प्रश्नों पर उत्तरदाताओं से विभिन्न दृष्टिकोण और अंतर्दृष्टि प्राप्त करना था।

## मुख्य जाँच परिणाम

त्वरित आंकलन से पता चला कि भारत में युवा, कोविड-19, इसके लक्षणों, देखभाल और सुरक्षा उपायों से अच्छी तरह से वाकिफ थे। लेकिन साथ ही साथ तालाबंदी के दौरान उन्हें कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिसमें प्रजनन स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य तक उनकी पहुँच भी शामिल है। मुख्य जाँच परिणाम नीचे संक्षेप में दिए गए हैं:

### जागरूकता

- कोविड-19 के लक्षणों पर उत्तरदाताओं की जागरूकता काफी अधिक थी; अधिकांश युवा कम से कम दो प्रमुख लक्षणों, जैसे कि खांसी, बुखार, सांस लेने में कठिनाई और शरीर में दर्द - की पहचान करने में सक्षम थे। उत्तरदाताओं को बुनियादी सुरक्षा और रोकथाम के तरीकों - जैसे कि बार-बार हाथ धोना, चेहरे को ढंकना और सामाजिक दूरी बनाए रखना - पर बहुत अच्छी जानकारी थी। भारी बहुमत ने इन अभ्यासों का ध्यान से पालन करने की सूचना भी दी। अधिकांश युवाओं द्वारा तालाबंदी का पालन किया जा रहा था, जो अध्ययन के समय देशव्यापी था।
- आम तौर पर, उम्र में बढ़े, और उच्च स्तर की शिक्षा वाले पुरुषों को, महिलाओं और शिक्षा के निचले स्तर वाले युवा समूहों की तुलना

में बेहतर जानकारी थी। सामाजिक रूप से हाशिए वाले समूहों जैसे एससी और एसटी में लक्षणों की जागरूकता कम थी।

- युवाओं के लिए सूचना का प्राथमिक स्रोत अभी भी पारंपरिक मीडिया जैसे टीवी और नीतिगत बैठकें, और क्षेत्रीय स्तर पर कार्यकर्ताओं - एफएलडब्ल्यू (फ्रंट लाइन वर्कर्स) से आमने-सामने बातचीत करना ही है। एक और सामान्य माध्यम व्हाट्सएप था, हालाँकि अन्य डिजिटल तकनीक पर निर्भर पोर्टल्स जैसे ट्विटर, आरोग्य सेतु ऐप और फेसबुक, जानकारी के सामान्य स्रोत नहीं थे।
- स्कूलों को शायद ही कभी सूचना के स्रोत के रूप में सूचीबद्ध किया गया था, जो शैक्षणिक संस्थानों की अपने परिसरों और शिक्षा सत्र के बाहर छात्रों के साथ जुड़े रहने की अक्षमता को दर्शाता है। लेकिन यहाँ, राज्य, एक दूसरे से सर्वोत्तम प्रथाओं का अनुकरण करना सीख सकते हैं: उदाहरण के लिए, राजस्थान में, कुल उत्तरदाताओं में से एक-चैथाई ने स्कूलों को कोविड-19 पर सूचना के एक विश्वसनीय स्रोत के रूप में सूचीबद्ध किया।
- अधिकांश उत्तरदाताओं ने यह भी कहा कि अगर उनमें या उनके किसी जानने वाले अन्य व्यक्ति में लक्षण नज़र आए तो वे डॉक्टर से संपर्क करेंगे, सेल्फ-आइसोलेशन करेंगे, और चिन्हित करने में सहायता प्रदान करेंगे। एक बड़ी संख्या ने यह भी कहा कि वे अपने लक्षणों को दूर करने के लिए एफएलडब्ल्यू या प्रधान से संपर्क करेंगे और आगे के रास्ते पर सलाह लेंगे।
- स्थानीय ज़मीनी स्तर के व्यक्तियों और संस्थानों, जैसे एफएलडब्ल्यू का सूचना के विश्वसनीय स्रोत और कोविड-19 के संदिग्ध मामले में उनका प्रथम संपर्क होना, उनकी प्रासंगिकता और सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल से निपटने में इन संस्थानों के महत्व को दोहराता है। आगे बढ़ते हुए, इनको अधिक से अधिक सशक्त, तैयार और सुदृढ़ करना आवश्यक है।

## चुनौतियाँ

- देशव्यापी तालाबंदी के साथ युवाओं ने जिन प्राथमिक चुनौतियों का सामना किया, उनमें से एक घरेलू काम के भार में बढ़ोतरी थी। उम्मीद के अनुसार, पुरुषों की तुलना में अधिक महिलाओं ने अपने घरेलू काम का भार बढ़ने के बारे में बताया।
- घरेलू संघर्षों में बढ़ोतरी या घर पर झगड़े केवल एक-चैथाई प्रतिभागियों द्वारा रिपोर्ट किए गए थे। घरेलू झगड़े बढ़ने की रिपोर्ट करने वालों में महिलाएँ अधिक थीं।
- उत्तरदाताओं की एक छोटी संख्या ने तालाबंदी के दौरान आर्थिक चिंताओं के बारे में सूचना दी और इनमें से अधिकांश पहले से ही कार्यरत थे, तालाबंदी के बाद वे जो बेरोज़गार थे और सक्रिय रूप से नौकरी की तलाश कर रहे थे।

- कुल उत्तरदाताओं में से आधे से अधिक ने तालाबंदी के दौरान अधिक टीवी देखने की सूचना दी, जबकि आधे से कम ने अपने सोशल मीडिया के उपयोग बढ़ने की सूचना दी। हालाँकि, उनमें से कई जिन्होंने अपने टीवी या सोशल मीडिया देखने में कमी की सूचना दी, वे महिलाएँ थीं।
- कुल उत्तरदाताओं के एक छोटे हिस्से ने उदासी, निराशा और चिड़चिड़ा महसूस करने की सूचना दी। दिलचस्प और संयोग की बात यह है कि जिन लोगों ने बड़ी संख्या में निराशा या उदासी और चिड़चिड़ा महसूस करने की सूचना दी, उन्होंने तालाबंदी के दौरान टीवी और सोशल मीडिया के उपयोग में बढ़ोतरी की सूचना भी दी। यह प्रवृत्ति क्या संकेत देती है उसे समझने के लिए अधिक गहराई से गुणात्मक शोध करने की आवश्यकता है।

## प्रजनन स्वास्थ्य देखभाल की पहुँच

- हालाँकि 5 में से लगभग 3 उत्तरदाताओं ने तालाबंदी के दौरान एफएलडब्ल्यू के साथ कुछ संपर्क होने की सूचना दी, तालाबंदी के दौरान प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं तक उनकी पहुँच बाधित हुई।
- आधे से अधिक महिलाओं ने सैनिटरी पैड की आवश्यकता पूरी न होने की सूचना दी और केवल एक-तिहाई युवाओं ने तालाबंदी के दौरान आईएफए गोलियाँ मिलने की पुष्टि की। अधिकांश युवाओं को यह भी पता नहीं था कि तालाबंदी के दौरान एफएलडब्ल्यू गर्भनिरोधक प्रदान कर सकते हैं।

## मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं

- आधे से अधिक युवाओं ने पुष्टि की कि उन्हें मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जानकारी पर पहुँच थी और उनमें से लगभग आधे युवाओं ने कहा कि उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य सेवा या संसाधन का किसी न किसी रूप में उपयोग किया। उत्तर प्रदेश में 89% महिलाओं ने तालाबंदी के दौरान कुछ मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का उपयोग करने की सूचना दी।
- मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की ज़रूरत वाले लोगों में से लगभग सभी ने पाया कि दी गई सहायता उनके लिए उपयोगी या बहुत उपयोगी थी।
- जिन विभिन्न संसाधनों का उपयोग किया गया, उनमें से अधिकांश-स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के साथ आमने-सामने बातचीत, दोस्तों के साथ बातचीत और टीवी - बताए गए। स्वास्थ्य देखभाल पर सूचनाओं के अनौपचारिक माध्यम, जैसे दोस्त या टीवी शो, सबसे आदर्श तरीके नहीं हैं, क्योंकि प्रदान की जाने वाली जानकारी की सटीकता की जाँच नहीं की जाती और देखभाल प्रदान करने वाले उसके लिए प्रशिक्षित नहीं होते हैं।

## आवश्यकताएँ और प्राथमिकताएँ

त्वरित मूल्यांकन के जाँच परिणामों के आधार पर, हमने युवाओं की निम्नलिखित मुख्य आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं की पहचान की है, जिन्हें महामारी के दौरान और उसके बाद भी बनाए रखा जाना ज़रूरी है।

- **प्रजनन स्वास्थ्य तक पहुँच:** जैसा कि महामारी ने दिखाया है और हमारे मूल्यांकन ने दोहराया है, कोविड-19 के प्रकोप के दौरान प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच को एक झटका लगा है। युवाओं ने ऐसी सेवाओं के लिए अधूरी ज़रूरतों की सूचना दी, क्योंकि भारत की सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली का ध्यान महामारी के नियंत्रण और प्रबंधन पर केंद्रित था।
- **मानसिक स्वास्थ्य देखभाल:** युवाओं ने मानसिक स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं की आवश्यकता व्यक्त की है और जिन लोगों ने इनका उपयोग किया, उन्होंने इसे सकारात्मक रूप से प्रभावशाली पाया। हालाँकि, कई युवाओं के लिए, मानसिक स्वास्थ्य के अनौपचारिक तरीके - जैसे कि दोस्तों के साथ बातचीत - उपलब्ध संसाधनों से अधिक प्रबल हैं। इन अनौपचारिक स्रोतों को अनिवार्य रूप से सत्यापित नहीं किया जाता है और वे जो सूचना या मध्यस्थता प्रदान करते हैं, वह आवश्यक रूप से जाँची नहीं जाती या उचित नहीं होती। इसलिए, मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं के औपचारिक तरीकों को विकसित और सुव्यवस्थित करने की तत्काल आवश्यकता है जो प्रशिक्षित हों, विश्वसनीय हों और जो युवाओं के लिए आसानी से सुलभ हों।
- **महिलाओं पर देखभाल का दुगुना भार:** पुरुष प्रतिभागियों की तुलना में महिला प्रतिभागियों ने अपने घरेलू काम के साथ-साथ घर पर होने वाले झगड़े बढ़ने की अधिक अनुपात में सूचना दी। यह संबंध आंकड़ों में भी नज़र आया, जैसे कि अधिक महिलाओं ने अपने टीवी और सोशल मीडिया के उपयोग में कमी बताई (संभवतः उनके बढ़ते कार्यभार के कारण जो मनोरंजन के लिए कम समय देता है), और उत्तर प्रदेश में महिलाओं के एक बड़े हिस्से ने महामारी के दौरान कुछ मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का उपयोग करने की सूचना दी है। घरेलू कार्यभार साझा करने पर सामाजिक संदेश और मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की आसान उपलब्धता के माध्यम से, इस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है।
- **पुरुषों में आर्थिक चिंता:** कुछ पुरुषों ने महामारी से आर्थिक पतन के बारे में चिंतित होने की सूचना दी; जो पुरुष पहले से कार्यरत थे, ज्यादातर उन्होंने चिंता व्यक्त की और तालाबंदी के बाद जो बेरोज़गार थे, लेकिन सक्रिय रूप से रोज़गार की तलाश कर रहे थे। कोविड-19 के मद्देनजर मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को आर्थिक चिंता को ध्यान में रखना चाहिए और इस मुद्दे को संबोधित करने के लिए सुसज्जित होना चाहिए।

## सिफारिशें

युवाओं की उपरोक्त आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए, निम्नलिखित रणनीतियों का सुझाव दिया गया है:

- **सामाजिक रूप से हाशिए के समुदायों में सूचना और प्रसार को मज़बूत करना:** वर्तमान महामारी जैसे सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल के दौरान प्रसारित होने वाली सूचनाओं के मुख्य संदेशों को मज़बूत करने की आवश्यकता है। इस जानकारी को सामाजिक रूप से हाशिए के समुदायों जैसे कि एससी और एसटी तक पहुँचाने के लिए ठोस प्रयास किए जाने की ज़रूरत है। इस कार्य को टीवी पर लक्षित लोक सेवा घोषणा (पीएसए), व्हाट्सएप के माध्यम से संचार और फ्रंट लाइन वर्कर्स (एफएलडब्ल्यू) द्वारा घर-घर जाकर पूरा किया जा सकता है।
- **पहली पंक्ति के कार्यताओं को प्रशिक्षित करना:** एफएलडब्ल्यू - सूचना के स्रोतों के रूप में, प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँचने के लिए, संदिग्ध लक्षणों की रिपोर्टिंग के लिए और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी जानकारी के स्रोतों के रूप में - कई भूमिकाओं में महत्वपूर्ण रहे। बहु-स्तरीय और ज़मीनी स्तर के कर्मियों के रूप में, एफएलडब्ल्यू भारत की सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली की नींव का प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्हें मज़बूत बनाने, प्रशिक्षण देने और सशक्त बनाने में समय और संसाधनों का निवेश करना, महामारी के दौरान और आगे, दोनों में हमारे काम आएगा।
- **प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं को प्राथमिकता:** जैसा कि महामारी ने दिखाया है और हमारे आंकलन ने दोहराया है, कोविड-19 के प्रकोप के दौरान प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं और परिवार नियोजन से संबंधित सेवाओं तक पहुँच को एक झटका लगा है। युवाओं ने ऐसी सेवाओं से जुड़ी अधूरी ज़रूरतों की सूचना दी, क्योंकि भारत की सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली का ध्यान महामारी के नियंत्रण और प्रबंधन पर केंद्रित था। इसलिए, प्रजनन स्वास्थ्य के लिए निरंतर प्राथमिकता की पैरवी करने की आवश्यकता है। एफएलडब्ल्यू को प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं को प्रभावी और लगातार बनाए रखने के लिए बेहतर संसाधनों से सुसज्जित करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, यह सुनिश्चित करने के लिए कि प्रजनन स्वास्थ्य सेवाएं बाधित न हों, सार्वजनिक बहस के स्तर पर लगातार यह दोहराए जाने की आवश्यकता है कि प्रजनन स्वास्थ्य, सार्वजनिक स्वास्थ्य का एक मौलिक और अटूट पहलू है। यह भी कहने की ज़रूरत है कि इसकी गुणवत्ता की प्रदानगी एक विकल्प नहीं बल्कि एक आवश्यकता है और विशेष रूप से एक सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल के समय में। प्रासंगिक सामाजिक संगठनों को इस ओर शासन के विभिन्न स्तरों के साथ सहयोग और काम करने की आवश्यकता है।

- **सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन के लिए समान लिंग सामान्य मानदंड:** हमारे शोध ने इस बात पर प्रकाश डाला कि पुरुषों की तुलना में अधिक महिलाओं ने अपने कार्यभार में बढ़ोतरी का अनुभव किया, घरेलू झगड़े की सूचना दी और मानसिक स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं का इस्तेमाल किया। ये आँकड़े संबंधित हैं जो किसी भी सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल के दौरान महिलाओं पर देखभाल के दोहरे बोझ को प्रदर्शित करते हैं। सरकारी एजेंसियों और सामाजिक संगठनों को सामाजिक मानदंडों को संबोधित करने और चुनौती देने के लिए ठोस प्रयास जारी रखने की आवश्यकता है जो परंपरागत रूप से देखभाल का बोझ महिलाओं पर डालते हैं, जिनका उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव होता है। पुरुषों और महिलाओं दोनों में टीवी देखने की उच्च व्यापकता को देखते हुए, सामाजिक परिवर्तन के लिए एडुटेनमेंट यानी मनोरंजन परक शिक्षा अपनाना सही दिशा में एक कदम है।
- **मानसिक स्वास्थ्य सेवा:** औपचारिक और प्रशिक्षित तरीकों के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को युवाओं की बढ़ती आवश्यकताओं और उपयोग को देखते हुए बढ़ाया जाना चाहिए। ऐसे अधिक संसाधनों की पहचान करने और शामिल करने की आवश्यकता है जो युवाओं को सेवा प्रदान कर सकते हैं, जैसे स्वयं सहायता किट, व्हाट्सएप्प समुदाय, फोन हेल्पलाइन, और अनुभवी काउंसलर और शिक्षकों को प्रशिक्षण देना। फ्रंट लाइन वर्कर्स (एफएलडब्ल्यू) जो मानसिक स्वास्थ्य चिंताओं को संबोधित करने के लिए सबसे विश्वसनीय और सामान्य स्रोतों में से एक हैं, उन्हें आगे चलकर युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य चिंताओं को प्रभावी ढंग से संबोधित करने के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है। विभिन्न सामाजिक संगठन पहले से ही इस क्षेत्र में काम कर रहे हैं और संबंधित सरकारी एजेंसियों के साथ उनके सहयोग की सिफारिश की जाती है।
- **शैक्षिक संस्थानों की पुर्नकल्पना करना:** स्कूल विश्वसनीय जानकारी के लिए व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले स्रोत नहीं थे और न ही वे मानसिक स्वास्थ्य देखभाल की निरंतर प्रदानगी या आयरन फोलिक (आईएफए) की गोलियों तक पहुँच के लिए महत्वपूर्ण स्रोत थे। एक तरह से शिक्षण संस्थानों की पुर्न कल्पना की ज़रूरत है, जो छात्रों के साथ गहरे संबंध और बातचीत को बढ़ावा दें और केवल छात्रों के स्कूल या शैक्षणिक सत्र में होने तक सीमित न हों। आगे बढ़ने जाने का एक तरीका व्हाट्सएप्प ग्रुप और समुदायों को उपयोग करना है। शिक्षकों को मानसिक स्वास्थ्य सेवा देने के लिए प्रशिक्षित करना, छात्रों और शैक्षणिक संस्थानों के बीच घनिष्ठ संपर्क को मज़बूत कर सकता है।







**मुख्य कार्यालय:**

बी-28, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली - 110016

टै: +91 11 43894 100

**राज्य कार्यालय:** बिहार | राजस्थान | उत्तर प्रदेश

 [populationfoundation.in](http://populationfoundation.in)

 [PopFoundIndia](https://www.facebook.com/PopFoundIndia)

 [PopFoundIndia](https://twitter.com/PopFoundIndia)

 [popfoundind](https://www.instagram.com/popfoundind)